सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा: 6	विषय:हिन्दी	पाठ:3

श्री मुफ़्तानंद से मिलिए

बोलक

(क) श्री मुफ़्तानंद का व्यवहार ऐसा था कि वे हर चीज फ्री में चाहते थे। जैसा उनका नाम था वैसा ही उनका गुण था।

(ख) श्री मुफ़्तानंद जी के जीवन में मुफ्त चीयों का बहुत महत्व है। उन्हें लगता है कि जो स्याद मुफ्त का खाने में आता है यह पैसा खर्च करने पर नहीं आता।

(ग) श्री मुफ़्तानंद दूसरे की किताबें ले जाते हैं फिर उसे वापस करने का नाम नहीं लेते। उन्होंने इस प्रकार से अनेक पुस्तकें अपनी अलमारी में बंद करके रखी हुई हैं जिन्हें वह लौटाने का वादा करके ले गये थे।

(घ) श्री मुफ्तानंद जी ने भारत की जनसंख्य बढ़ाने में सहयोग इस प्रकार दिया है कि उनकी चार लड़कियाँ और छह लड़के हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर- (लिखकर)

(क) लेखक ने गुफ्तखोरी की प्रवृत्ति की आलोचना गुफ्तानंद के माध्यम से की है। मुफ्तखोरी की अनुचित आदत के कारण लोग अपना आत्म-सम्मान, परिश्रम और आत्मनिर्भरता को भी दाँव पर लगा देते हैं।

(ख) वच्चों को स्कूल की फीस न देनी पड़े, इसके लिए वह हमेशा फ्रीस माफ करने के चक्कर में स्कूलों के मैनेजर और प्रिंसिपलों के घर पर धरना देते रहते हैं।

(ग) श्री मुफ्तानंद की डॉक्टर, वैद्य, हकीम सभी से मित्रता होने के कारण मुफ्त में दवाई हासिल कर लेते थे।

(घ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें मुफ्तखोरी की आदत नहीं डालनी चाहिए। हमे दूसरों के धन पर ऐश हीं करनी चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) हाँ, मुफ्तानंद जैसे लोग समाज में समस्याएँ पैदा करते हैं क्योंकि उनकी बजह से बाई बार अन्य लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोग मुफ्त के चक्कर में दूसरों को मुसीबत में डाल देते हैं और गरीब लोगों के हक को छीन कर अपना लाभ उठाते हैं।

(ख) यदि हम लेखक की जगह होते तो मुफ्तानंद को यह सलाह देते कि आप अपने आप में आर्थिक रूप से सक्षम है, इसलिए मुफ्त के सामान से दूर रहिए।

(ग) मुफ्तानंद जी कमीज़ फड़वाकर और चप्पल खोकर फ्री में बर्फ का टुकड़ा ले आए। हमारे विचार से यह सौदा उनके लिए पूरी तरह घाटे का सौदा था, क्योंदि अब उन्हें दूसरी चप्पल लेनी पड़ेगी और कमीज फटने का जो नुकसान हुआ सो अलग। बर्फ तो कम पैसे में आती है, जबकि कमीज़ और चप्पल में उन्हें बर्फ़ से बहुत ज्यादा पैसा खर्च करना पड़ेगा।

(घ) इस कथन के द्वारा लेखक यह कहना चाहते हैं कि जब मेरे दोनों समाचार-पत्र मुफ्तानंद जी पढ़ लेते हैं, तभी जाकर वे समाचार पत्र मुझे नसीब होते हैं। कहने का तात्पर्य है कि जिस तरह ईश्वर को भोग पहले लगाया जाता है उसके बाद बचे हुए प्रसाद को सबको बाँटा जाता है वैसे ही

सबसे पहले समाचार पत्र का भोग मुफ़्तानंद जी को लगता है और उसके बाद वह लेखक के हिस्से में आता है।

पठित गद्यांश-

(क) नगर में बर्फ का कारखाना खुला था और उस कारखाने के मालिक ने दो दिन तक मुफ़्त में बर्फ बाँटने का ऐलान करवा दिया था। अतः मुफ़्तानंद जी मुफ़्त में बर्फ़ लेने गए थे।

(ख) बर्फ लेने के चक्कर में उनकी जूती खो गई तथा कमीज फट गई।

(ग) लेखक ने मुफ़्तानंद जी को 'मुफ़्तखोरों के बादशाह' के नाम से इसलिए संबोधित किया है क्योंकि वह एक बर्फ के टुकड़े के लिए घंटों समय नष्ट करके लाइन में लगकर अपनी कमीज़ फ़रवा कर मुफ़्त में बर्फ का टुकड़ा लेकर आए थे।

(घ) मुफ़्तानंद जी ने अपने नुकसान के बारे में यह सोचा कि मुफ़्त में मिली बर्फ के आगे यह नुकसान मामूली है।

(ङ) लेखक ने मुफ़्तानंद जी को उस्ताद इसलिए कहा है क्योंकि डॉक्टर तो दुनिया की नब्ज टटोलते हैं पर मुफ़्तानंद जी डॉक्टरों की। वे डॉक्टर तक से फ्री में दवाई ले आते हैं।